

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 8: पृथ्वी पर दृश्य**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, पृथ्वी पर दृश्य है।

**परिचय: अय्यूब 1:1-5, उज़ की भूमि [00:22-1:26]**

तो, अब हम नौकरी की वास्तविक पुस्तक में शामिल होने के लिए तैयार हैं। हमने इसके बारे में सब बात की है। हमने इसके कई पहलुओं के बारे में बात की है, और अब हम पुस्तक की सामग्री के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं। इस खंड में, हम केवल पृथ्वी के दृश्य, पुस्तक के पहले पाँच छंदों से निपटेंगे। और इसलिए, हमें अय्यूब से उज़ देश के एक व्यक्ति के रूप में परिचित कराया गया। इसका मतलब है कि वह एक विदेशी है और वह किसी अज्ञात, रहस्यमय जगह से है, जो प्राचीन इज़राइली दर्शकों के लिए ज्ञात दुनिया की परिधि पर है। तो, वह इस रहस्यमय रेगिस्तानी क्षेत्र से है, सीरियाई रेगिस्तान का एक क्षेत्र, जो शायद एदोम से जुड़ा हुआ है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए जाना जाता है।

उनके दोस्त भी उसी क्षेत्र से हैं। तो, उदाहरण के लिए, हमारे पास एक टेमनाइट है। तो, वह तेमान से है। तो, यह वह क्षेत्र है जो इज़राइल की भूमि के दक्षिण और पूर्व में है।

उत्पत्ति 36 उज़ को एसाव से जोड़ता है, और फिर से उस क्षेत्र में चीजों को रखता है। अय्यूब की पुस्तक की सबसे प्रारंभिक व्याख्या, जो सेप्टुआजेंट में पाई जाती है, उज़ को इडुमिया और अरब के बीच स्थित करती है। तो फिर, मूलतः, वह क्षेत्र। इसलिए, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, अय्यूब एक इस्राएली नहीं है; वह इस संबंध में एक बाहरी व्यक्ति है, भले ही पुस्तक इजरायली मुद्दों से संबंधित है और इजरायली दर्शकों को संबोधित है।

**चरम में अय्यूब का चरित्र और कार्य [1:26-3:58]**

हम स्वयं अय्यूब के वर्णन में पाते हैं कि हर चीज को चरम सीमा में चित्रित किया गया है। तो, अय्यूब निर्दोष है। हिब्रू शब्द *תָּמַר* है, और वह सीधा है, *יָשָׁר*। ये क्रमशः उनके चरित्र और उनके कार्यों का उल्लेख करते हैं। और इसलिए, यहाँ वह व्यक्ति है जो हर तरह से वफादार है। वह एक ईमानदार

व्यक्ति हैं। उनके साथ कोई दोष या अपराधबोध नहीं जुड़ा है। वह ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार करता है और परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेता है। यदि हम अय्यूब का वर्णन करने के लिए विपरीत शब्दों की तलाश करते हैं, तो हम ऐसे शब्दों की तलाश करेंगे जैसे कोई व्यक्ति जिसे दोषी घोषित किया गया हो या जिसे दुष्ट माना गया हो, जो निंदा के अधीन है। नौकरी वो चीजें नहीं है। जो शब्द उसका वर्णन करते हैं वे उसके विपरीत हैं। साथ ही, ये पाप रहित पूर्णता के शब्द नहीं हैं। अय्यूब अपने व्यवहार के मामले में दैवीय क्षेत्र में नहीं है, लेकिन यह सबसे अच्छा है जो एक व्यक्ति हो सकता है, सबसे अच्छा जो एक इंसान हो सकता है।

वह ईश्वर से डरता है, यहां ईश्वर के लिए शब्द एलोहीम है, याहवे नहीं। इसलिए, वह एलोहीम से डरता है। इसका मतलब है कि उसके बारे में जो कुछ पता है, उसके आधार पर वह उसे गंभीरता से लेता है। हमारे पास इसराइल के बाहर के अन्य लोगों का भी इसी तरह वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए, योना की पुस्तक में नाविकों को ईश्वर से डरने वाले के रूप में वर्णित किया गया है। और यह इस पर आधारित है कि वे उसके बारे में कितना कम जानते हैं। यहां तक कि उत्पत्ति की पुस्तक में भी, अबीमेलोक को इब्राहीम के विपरीत वर्णित किया गया है, जिसका यहोवा के साथ व्यक्तिगत संबंध है। इसलिए, इन सभी शब्दों ने अय्यूब को उच्चतम संभव स्थिति में चित्रित किया। और फिर, हमने चीजों का वर्णन करने के लिए चरम सीमाओं के उपयोग का उल्लेख किया है।

### **चरम में अय्यूब की संपत्ति [3:58-4:46]**

अब उसकी संपत्ति और उसका रुतबा भी आदर्श दायरे में है। जरूरी नहीं कि वे काल्पनिक हों, लेकिन हर चीज विशाल है। तो, ये रूढ़ियाँ हैं कि कितने मवेशी, कितने ऊँट, कितनी भेड़-बकरियाँ, हर चीज़ को आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। उन्होंने उच्चतम संभव मानकों द्वारा सफलता और समृद्धि हासिल की है। और इसलिए, फिर से, उस तरह से, हमने चरम सीमाओं को चित्रित किया है। सिर्फ इसलिए कि वे अतिवादी हैं इसका मतलब यह नहीं है कि वे सच या सटीक नहीं हैं। लेकिन हमें ध्यान देना होगा कि चरम सीमाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं ताकि वे उन आसान उत्तरों को तालिका से बाहर कर दें। तो, यहाँ हमारे पास अय्यूब का विवरण है।

### **अय्यूब की धर्मपरायणता: अनुष्ठान अभ्यास [4:46-6:24]**

अब, यकीनन इन मुद्दों में सबसे पेचीदा बात उसकी धर्मपरायणता का सवाल है। श्लोक चार और पाँच में, हमारे लिए एक दृश्य का वर्णन किया गया है जब उसके बेटे और बेटियाँ, जाहिर तौर पर, जन्मदिन की पार्टियों, या किसी प्रकार के भोज के लिए इकट्ठा होते थे। अय्यूब के पास यह अनुष्ठान होगा जिसे उसने बाद में किया। यह एक ऐसी सेटिंग है जो बताती है कि केवल बाहरी संभावना है कि कोई अपराध किया गया है। यदि हम छंद पढ़ते हैं, तो यह कहता है, "उसके बेटे अपने जन्मदिन पर अपने घरों में दावतें आयोजित करते थे। और वे अपनी तीन बहनों को अपने साथ खाने और पीने के लिए आमंत्रित करते थे। जब दावतों का दौर पूरा हो जाता था, तो अय्यूब ऐसा करता था।" उन्हें शुद्ध करने की व्यवस्था। सुबह-सुबह, वह उनमें से प्रत्येक के लिए एक होमबलि चढ़ाता था, यह सोचकर, 'शायद मेरे बच्चों ने पाप किया है और अपने दिल में भगवान को शाप दिया है।' यह अय्यूब की नियमित रीति थी।" तो, हमें यह प्रथा मिलती है। यह भोज सेटिंग में भी है कि अध्याय एक, छंद 18 और 19 में अंततः उनकी मृत्यु हो जाती है। वे वास्तव में भोज कर रहे होते हैं जब घर उनके ऊपर गिर जाता है और आग लग जाती है, और वे अपनी जान गंवा देते हैं। अय्यूब को चिंता हुई कि शायद उन्होंने अपने मन में परमेश्वर को शाप दिया हो।

### **बच्चे "अपने दिलों में" कोस रहे हैं [6:24-7:07]**

अब यह "उनके दिलों में" विचार, जब आप इसे किसी व्यक्ति पर लागू करने के लिए उपयोग करते हैं, तो यह निजी विचारों को संदर्भित करता है, लेकिन यह व्यक्तिगत रूप से उनके बारे में नहीं है। यह उनके कॉर्पोरेट मिलन समारोहों, उनके भोज के बारे में है। जब लोगों का एक समूह दृश्य का हिस्सा होता है, तो यह कॉर्पोरेट सोच को संदर्भित कर सकता है या गोपनीय रूप से साझा किया जा सकता है। और हमें व्यवस्थाविवरण 8:17, 18:21 और इसी तरह, भजन 78:18 जैसी जगहें मिलती हैं, जहां "उनके दिलों में" का विचार एक कॉर्पोरेट बातचीत हो रही है।

### **भगवान को श्राप/आशीर्वाद दें [7:07-10:59]**

इसके अलावा, जब यह कहता है, "उन्होंने अपने हृदयों में परमेश्वर को शाप दिया," तो यह "अभिशाप" के लिए हिब्रू शब्द का उपयोग नहीं करता है। यह "आशीर्वाद" के लिए हिब्रू शब्द का

उपयोग करता है। और इसलिए, यह "आशीर्वाद" का व्यंजनापूर्ण उपयोग है। "अभिशाप" और भगवान शब्द को एक दूसरे के बगल में रखना बुरा माना जाता था। और इसलिए, उन्होंने धन्य परमेश्वर का उपयोग किया। तो, यह वास्तव में कहता है कि शायद "उन्होंने अपने दिलों में भगवान को आशीर्वाद दिया है।" अब यह अय्यूब के इन शुरुआती अध्यायों में आशीर्वाद और शाप के बीच एक अच्छी बातचीत का पहला भाग है। तो, 1.11 में, 2.5 में भी चैलेंजर का सुझाव दिया गया है कि अय्यूब आशीर्वाद देगा, यानी, उसके चेहरे पर भगवान को श्राप देगा, अय्यूब के डर के विपरीत, कि उसके बच्चे अपने दिल में भगवान को आशीर्वाद दे सकते हैं या शाप दे सकते हैं। इसके बजाय, अय्यूब वास्तव में भगवान को आशीर्वाद देता है, न कि भगवान को श्राप देता है, हालांकि यह वही क्रिया है जिसे चुनौती देने वाले ने सुझाया था। अय्यूब की पत्नी ने उससे परमेश्वर को शाप देने का आग्रह किया; फिर, अध्याय दो, श्लोक नौ में क्रिया ईश्वर को स्पष्ट रूप से आशीर्वाद देना/शाप देना और मरना है। अय्यूब उस दूसरे दौर के बाद ईश्वर को आशीर्वाद देने के साथ प्रतिक्रिया नहीं करता है, लेकिन न ही वह ईश्वर को कोसता है। इसके बजाय, वह अपने जन्म के दिन को कोसता है। हम इसे अध्याय तीन में पाते हैं। साहित्यिक रूपांकन को स्थापित करने में शब्दों के इस विशिष्ट उपयोग से परे, अंतर्निहित कथा ढांचे पर भी विचार किया जाना चाहिए क्योंकि हम सोचते हैं कि ये शब्द कैसे काम करते हैं। कथा में, याद रखें कि अध्याय एक, श्लोक 10 में भगवान ने अय्यूब को बच्चों और संपत्ति के साथ आशीर्वाद दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि भगवान ने चुनौती देने वाले की प्रशंसा करके अय्यूब को मौखिक रूप से आशीर्वाद दिया था। कभी-कभी कोई आशीर्वाद प्रशंसा से पूरा होता है। उस मौखिक आशीर्वाद की प्रकृति, चुनौती देने वाले के सामने ईश्वर द्वारा अय्यूब को आशीर्वाद देना, एक अर्थ में अभिशाप बन जाता है क्योंकि इसे चुनौती का आधार बना दिया गया था जिससे अय्यूब की भौतिक समृद्धि का नुकसान हुआ।

अंततः, निःसंदेह, पुस्तक के अंत में हमें जो भौतिक आशीर्वाद मिलता है, ईश्वर उसे पुनः बहाल कर देता है। तो, शाप-आशीर्वाद विरोधाभास पुस्तक में एक मूल भाव के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में खड़ा है। अब, परमेश्वर को कोसने का वास्तव में क्या मतलब होगा? वो कैसा लगता है? भगवान को कोसने के बारे में कई तरह से सोचा जा सकता है। भगवान का नाम लेना और तुच्छ शपथ लेना

एक तरीका होगा। शक्ति के शब्दों के साथ-साथ भगवान के नाम का उपयोग करना। तो, एक हेक्स या उस तरह का कुछ। किसी जादू-मंत्र की तरह किसी ईश्वर के विरुद्ध शक्तिपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना। यहाँ तक कि ईश्वर के बारे में अपमानजनक, तिरस्कारपूर्ण या निंदनीय तरीके से बोलना, मूल रूप से ईश्वर का अपमान करना है। परोक्ष या स्पष्ट रूप से यह कहकर ईश्वर की अवमानना करना कि ईश्वर कार्य करने में शक्तिहीन है, या कि ईश्वर अपने कार्यों या उद्देश्यों में भ्रष्ट है, कि ईश्वर की आवश्यकताएं हैं, या कि ईश्वर को ईश्वर से कमतर बनाकर हेरफेर किया जा सकता है। अब, अय्यूब यकीनन भगवान के खिलाफ अपने आरोपों में इनमें से कुछ करता है, लेकिन वह क्रोध व्यक्त कर रहा है, अवमानना नहीं। और वह अभी भी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है, जैसा कि हम बाद में बात करेंगे। शायद यह सोचना सर्वोत्तम होगा कि ईश्वर को कोसने में तिरस्कारपूर्ण त्याग, अनादर, उचित सम्मान की उपेक्षा शामिल है। और, निस्संदेह, अय्यूब ने ऐसा नहीं किया।

### **अय्यूब का अनुष्ठान व्यवहार, ईश्वर क्षुद्र के रूप में [10:59-14:52]**

इस पूरे दृश्य में सबसे महत्वपूर्ण है अय्यूब के अनुष्ठानिक व्यवहार को समझने का प्रयास करना। अय्यूब जो करता है वह इस बात का संकेत नहीं है कि वह अपने बच्चों के बारे में क्या सोचता है, बल्कि यह दर्शाता है कि वह ईश्वर के बारे में क्या सोचता है। पद एक से पाँच तक का यह दृश्य हमें क्या बताता है कि अय्यूब परमेश्वर के बारे में क्या सोचता था? अय्यूब इस संभावना पर विचार कर रहा है कि भोज के संदर्भ में उसके बेटे और बेटियों द्वारा बिना सोचे-समझे बयान दिए जा सकते हैं और भगवान ऐसे बिना सोचे-समझे, बहुत प्रशंसात्मक बयानों पर नाराज होंगे।

शायद वक्ता के निर्दोष इरादों के बावजूद, हम जानते हैं कि प्राचीन दुनिया में इसे एक वास्तविक संभावना माना जाता था। हमारे पास एक असीरियन टुकड़ा है जिसे हर भगवान के लिए प्रार्थना कहा जाता है। और इसमें, उपासक बहुत चिंतित है कि वह स्पष्ट रूप से कुछ नकारात्मक अनुभवों से पीड़ित है। यह प्रार्थना समाधान की दिशा में काम करने का प्रयास कर रही है। वह कहते हैं, "अगर मैंने अनजाने में किसी ऐसे स्थान पर कदम रख दिया है जो मेरे भगवान या मेरी देवी या किसी ऐसे देवता के लिए पवित्र है जिसे मैं नहीं जानता, या किसी देवी के लिए जिसे मैं नहीं जानता।

अगर मैंने शायद कोई उच्चारण किया हो वह शब्द जो मेरे ईश्वर या मेरी देवी या सच्चे ईश्वर के लिए अपमानजनक है जिसे मैं नहीं जानता, या किसी देवी के लिए जिसे मैं नहीं जानता।" और वह उन चीजों की इस पूरी जाँच सूची को देखता है जो उसने अनजाने में की होगी जिससे उसके भगवान या उसकी देवी या वह देवता जिसे वह नहीं जानता या वह देवी जिसे वह नहीं जानता, नाराज हो सकती है।

हम देख सकते हैं कि इस तरह की प्रार्थना इस विचार की अभिव्यक्ति है कि देवता बहुत छोटे हो सकते हैं। वे ऐसी चीजों की मांग कर सकते हैं जिनके बारे में इंसानों के पास जानने का कोई तरीका नहीं होगा। अय्यूब का चरित्र और व्यवहार निंदा से परे है। लेकिन मेरी समझ में, अय्यूब की धार्मिकता के बारे में ये दो छंद सुझाव देते हैं कि ईश्वर के प्रति उसका दृष्टिकोण त्रुटिपूर्ण हो सकता है। इससे पता चलता है कि वह ईश्वर को तुच्छ समझता होगा।

यह उस तरह की अभिव्यक्ति है जो चैलेंजर द्वारा उसके खिलाफ चुनौती का रास्ता खोलती है। यदि अय्यूब ईश्वर को तुच्छ समझता है, तो वह यह सोचने के लिए तैयार हो सकता है कि, यह वास्तव में लाभ के बारे में है और यह धार्मिकता के बारे में नहीं है। यह आसानी से नाराज हो जाने वाले भगवान को खुश करने की कोशिश के बारे में है।

इसलिए, मेरा मानना है कि अध्याय एक में छंद चार और पांच वास्तव में अय्यूब के सकारात्मक चरित्र-चित्रण का हिस्सा नहीं हैं। यह वास्तव में दिखाता है कि उसके कवच में कमजोरी कहां हो सकती है कि वह पहले से ही भगवान के बारे में क्षुद्र सोच रहा है। और तथ्य यह है कि, उनके भाषणों में, वह वापस आने वाला है, और वह उन चीजों को और अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने जा रहे हैं।

### **अय्यूब 1:1-5 का सारांश [14:52-15:19]**

तो, श्लोक एक से चार तक, हमारे पास कथा को जारी रखने के लिए एक सेटअप है। हमने अय्यूब के बारे में सीखा है कि वह निंदा से परे है। हमने यह भी जान लिया है कि उसके कवच में कुछ कमी है और इसका फायदा उठाया जा सकता है। जब स्वर्ग का दृश्य खुलेगा तो हमें इसके बारे में और अधिक पता चलेगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, पृथ्वी पर दृश्य है।

[15:19]